

बढ़ोतरी हुई है किन्तु ये एक वर्ग विशेष (शहरी उच्च तथा मध्यम वर्ग) की आवश्यकताओं की ही पूर्ति करती हैं।

पिछले 5-10 वर्षों से यह देखने में आया है कि लघु मानसिक विकारों से पीड़ित लोग भी अब अधिकाधिक संख्या में मनोचिकित्सा सेवा प्राप्त करने लगे हैं। आज पदार्थों के सेवन से हुए मानसिक रोगों की रोकथाम, उनका उपचार व पुनर्वसन की आवश्यकता अधिक तीव्रता से महसूस हो रही है। मानसिक विकारों तथा मनोसामाजिक विकारों के सार्वजनिक स्वास्थ्य पर पड़ने वाले प्रभावों को लेकर आज जितनी जागरूकता है वह पहले कभी न थी। यद्यपि आज देश में विभिन्न प्रकार की मनोचिकित्सा सेवाएं उपलब्ध हैं किन्तु फिर भी रुग्णता, उपलब्ध सेवाओं व आवश्यकताओं के बीच अभी भी बहुत गहरी खाई है। औद्योगिकरण व शहरीकरण की बढ़ती गति, आर्थिक विकास तथा उसके परिणामस्वरूप होने वाले सामाजिक परिवर्तनों के कारण मानसिक चिकित्सा सेवाओं की आवश्यकता भविष्य में और भी बढ़ने की सम्भावना है। पारम्परिक मनोचिकित्सा सेवाओं का ध्यान अभी भी मानसिक विकारों से पीड़ित लोगों के उपचार व देखभाल तक ही सीमित है। (स्रोत फीचर्स)

डॉ. नरेश पुरोहित: कैन्सर केयर, इंदौर में कार्यरत हैं।



जैसा बोया वैसा पाया

ब्रिटेन के वैज्ञानिकों ने हाल ही में एक शोध के परिणामों के आधार पर बताया है कि गर्भधारण के तुरन्त बाद के कुछेक दिनों में मां द्वारा लिए जा रहे आहार का गर्भस्थ शिशु पर असर पड़ता है। इसी के आधार पर उसके स्वास्थ्य का भविष्य तय होता है।

दरअसल भ्रूण अपने आसपास के वातावरण के अनुसार अपने विकास की दर तय करता है। इस प्रक्रिया को प्रोग्रामिंग कहा जाता है। यदि मां कुपोषण की शिकार है तो भ्रूण के विकास की दर अत्यन्त धीमी होती है और पैदा हुए बच्चे कम वजन के होते हैं। ऐसे बच्चों में भविष्य में मधुमेह (डायबेटीज), उक्त रक्तचाप और हृदयाघात जैसी बीमारियों की संभावना अधिक होती है।

साउथैम्पटन विश्वविद्यालय में टॉम फ्लेमिंग के नेतृत्व में शोध कर रही टीम ने अपने अनुसंधान परिणामों के आधार पर कहा कि निषेचन के चार-पांच दिनों के भीतर ही प्रोग्रामिंग होनी शुरू हो जाती है। इस समय तक भ्रूण बच्चेदानी में स्थापित भी नहीं हुआ होता।

किसी नतीजे पर पहुंचने के लिए फ्लेमिंग की टीम ने एक प्रयोग किया। उन्होंने निषेचन और भ्रूण की स्थापना के बीच के चार से सवा चार दिनों की अवधि में मादा चूहों को कम प्रोटीन वाला भोजन दिया। इसके बाद की गर्भावस्था में चूहों को सामान्य आहार दिया गया। देखा गया कि इन मादा चूहों के बच्चे पैदा तो छोटे हुए परन्तु उसके बाद उनमें असामान्य तेजी से वृद्धि हुई। अंत में उनका वजन सामान्य हो गया।

यह देखा गया कि पैदा होते वक्त न बच्चे सामान्य आकृति और वजन के थे लेकिन इनकी विकास की प्रक्रिया का पैटर्न असामान्य था। इनमें उच्च रक्तचाप, सिकुड़े फेफड़े और औसत से बड़े गुदाँ की आम शिकायतें पाई गईं।

इस तरह की शारीरिक खामियों की वजह क्या थी यह पूरी तरह से स्पष्ट नहीं हो सका है। इसे जांचने के लिए शोधकर्ताओं ने प्रोटीन की कम मात्रा वाला भोजन कर रही मादाओं के गर्भ से भ्रूण निकालकर परीक्षण किया। परीक्षण में भ्रूण में सोची संख्या से कम कोशिकाओं की संख्या पाई गई। ऐसा इसलिए कि उनमें कमतर विभाजन हुआ था।

इसकी एक संभावित व्याख्या यह हो सकती है कि भ्रूण को प्राप्त पोषण की स्थिति यह तय करती है कि उसकी जीन किस तरह से प्रतिक्रिया व्यक्त करेंगी। फ्लेमिंग का मानना है कि इस खोज के जरिए क्लोन भ्रूण से जन्मे मवेशियों के असामान्य विकास की भी व्याख्या की जा सकती है।

पशुओं पर हुए इस शोध के आधार पर रॉसलिन इंस्टीट्यूट के इयान विलमुट का मानना है कि इस तरह के असर मानव भ्रूण के साथ भी हो सकते हैं। "ये तमाम अवलोकन उन लोगों को जो कृत्रिम गर्भाधान की बात सोच रहे हैं एक बार फिर सोचने को प्रेरित कर सकते हैं।"

(स्रोत विशेष फीचर्स)